ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 57-59
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एवं भारतीय सामाजिक व्यवस्था : एक विमर्श

डॉ0 छविनाथ प्रसाद

असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र, रामबचन सिंह राजकीय महिला महाविद्यालय, बगली पिजड़ा– मऊ (उ0प्र0), भारत

Received-11.07.2023, Revised-17.07.2023, Accepted-22.07.2023 E-mail: chhavi1976@gmal.com

सारांश: ***विश्व में अद्वितीय दलितों के मसीहा वंचितों एवं महिलाओं के उद्धारक, एक महान् चित्रकार, चिंतक, देश के समाज सुधारक, विधि वेत्ता महामनीषी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, देश के दिशा निर्देशक, संविधान निर्माता, अद्वितीय प्रतिभा के धनी डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को कोटि–कोटि नमन है। हमें गर्व है कि मैं उस देश की धरती पर जन्म लिया हूं जहां पर बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर जैसे महान विद्वान का जन्म हुआ है। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के व्यक्तित्व में स्मरण शक्ति की प्रखरता, बुद्धिमता, ईमानदारी, आत्मविश्वास, प्रचंड संग्रामी, स्वभाव मणिकांचन आदि का मेल था, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारत को एक परिवार मानकर उनके कल्याण के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। प्रस्तुत शोध–पत्र उनके वैचारिकी पृष्ठभूमि पर एक छोटा सा प्रयास***

कुंजीभूत शब्द– सुधारक, विधि वेत्ता, महामनीषी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्मरण शक्ति, ईमानदारी, आत्मविश्वास, प्रचंड संग्रामी, स्वभाव।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पुष्पित धर्मशास्त्र पर आधारित वर्ण व्यवस्था, जिनमें चार वर्ण क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सम्मिलित है। इन चार वर्णों में शूद्र वर्ण की दशा अत्यंत दयनीय था तथा इन्हें पवित्रता तथा अपवित्रता के आधार पर वैदिक काल से लेकर अब तक विभिन्न नामों से पुकारा गया। जैसे– अपदृष्ट, अवेदअवर्ण, पादप, चरजज, अन्त्यज, जघन्यज, अधम जाति, वृषल, दास, पापयोनि, चांडाल, अनार्य, भृत्य, अस्पृश्य, अछूत, दलित, हरिजन, अनुसूचित जाति आदि। शूद्र वर्ण पर अनेक प्रकार की सामाजिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं थोपा गया था। शूद्र वर्ण अन्य वर्णों से किसी भी प्रकार का न तो खान–पान, विवाह स्थापित करेगा और न ही सामाजिक संपर्क स्थापित करेगा। शूद्र वर्ण को व्यवसाय के रूप में समाज के सबसे गंदे एवं घृणित कार्य सौंपे गए थे जिसका प्रभाव वर्तमान समय में दिखाई पड़ता है। अब भी शूद्र वर्ण से संबंधित अधिकांश जातियां घृणित कार्यों में संलग्न हैं। कार्य की दशा से उनके जीवन शैली एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण में बाधक है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर भारतीय सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त सामाजिक बुराईयों से अत्यंत दुखी एवं क्षुब्ध थे, इसलिए वे भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन कर समरसता स्थापित करना चाहते थे, क्योंकि डॉ0 अम्बेडकर समग्र कल्याण एवं विकास, सुख समृद्धि के लिए सर्वे भवंतु सुखिनः के पक्षधर थे। उक्त कथन समरसता का उच्च आदर्श स्थापित करता है। मानव समाज में व्याप्त बाह्य आडंबर, कर्मकांड, दैनिक–दैहिक–भौतिक पापों और तापों से मुक्ति का भाव भी इसी में समाहित है।

समरसता का मूल भाव ही समाज में भेदभाव, अस्पृश्यता को दूर कर समाज को संगठित बनाना है। एक संगठित समाज को बनाए रखने में समता का एक श्रेष्ठ तत्व निहित है इसीलिए डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर भारतीय संविधान के निर्माण में प्रमुख स्थान दिया है। डॉ0 अम्बेडकर कहते थे कि बंधुता ही स्वतंत्रता तथा समानता का आश्वासन है। समतापूर्वक व्यवहार से स्वतंत्रता, समता एवं बंधुत्व। इन तीनों तत्वों द्वारा साध्य तक पहुंचा जा सकता है। यद्यपि इन तत्वों के आधार पर हिंदू समाज की रचना नहीं हुई है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था वैदिक काल से चतुर्वर्ण व्यवस्था पर आधारित रही है। यह चतुर्वर्ण व्यवस्था वैदिक काल से धर्म शास्त्रों पर आधारित है तथा जिनमें मनु द्वारा रचित मनुस्मृति के विधान को प्रमुख रूप से प्रधानता दी गई थी। डॉ0 अम्बेडकर ने धर्म शास्त्रों का गहन अध्ययन किया और पाया कि उक्त धार्मिक विधान किसी युक्तियुक्त तर्क पर आधारित न होकर केवल ब्राह्मण वर्ण के निहित स्वार्थ से प्रेरित है, क्योंकि इस चतुर्वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च होने के कारण इन्होंने सामाजिक व्यवस्था की संरचना अपने हित में बनाया। हालांकि वर्तमान समय में इसका कोई औचित्य नहीं है फिर भी वर्तमान समय में भी किसी न किसी रूप में भारतीय समाज में स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ता है, जो किसी भी समाज के प्रगति के मार्ग को अवरुद्ध करता है इसलिए डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने मनु द्वारा स्थापित वर्ण व्यवस्था को खुले रूप में चुनौती दिया तथा मानवीय मूल्यों एवं अधिकारों की रक्षा के लिए एक नए समाज के विधान की आवश्यकता पर विशेष बल दिया तॉकि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों को दूर कर मानवीय मूल्यों एवं अधिकारों की रक्षा हो सकें।

डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने अपने अध्ययनों के आधार पर भारतीय सामाजिक व्यवस्था में हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार, निर्मित चतुर्वर्ण व्यवस्था को अन्यायपूर्ण एवं अभिसापित बताया। अम्बेडकर ने कहा कि हिंदुओं में चतुर्वर्ण व्यवस्था और हिंदू विधान दोनों ही सामाजिक न्याय की कसौटियों स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व पर खरे नहीं उतरते हैं। भारतीय समाज में व्याप्त असमानता हिंदू समाज की बुनियादी सिद्धांत है, क्योंकि हिंदू धर्म का चिंतन असमानता की बुनियाद से बना हुआ है। असमानता ही भारतीय समाज की आत्मा है, क्योंकि वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित है। परिणामस्वरूप अपरिवर्तनीय है जो असमानता का देवतक है। तथापि कुछ धर्मग्रन्थों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि वर्ण परिवर्तन गुणों एवं कर्मों के आधार पर हुआ है, लेकिन फिर भी सामाजिक महत्व के दृष्टिकोण से उनको वर्ण व्यवस्था में उचित स्थान नहीं प्राप्त था तथा उन्हें उसी वर्ण के नाम से सम्बोधन किया जाता था। सामाजिक व्यवस्था के सोपान में शूद्र की स्थिति दासों से भी अधिक गिरी हुई थी या कह सकते हैं कि पशुओं से भी अधिक गिरी हुई दशा थी। मनु का सबसे बड़ा दोष यह था कि सामाजिक असमानता के साथ–साथ धार्मिक असमानता संबंधी विधान को गढ़ा था ऐसा करने पीछे उनका चिंतन यह था कि धार्मिक सिद्धांत को स्वीकार करने से वर्गीय असमानता का त्याग स्वतः हो जाएगा। डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार, मनु यदि केवल सामाजिक असमानता के विधान को ही बताते, तो समस्या उतना गंभीर नहीं होता और न ही वह हिंदू समाज के पतन के लिए सर्वाधि

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

उत्तरदायी ठहराए जाते। मनु का ब्राह्मणों के प्रति निहित स्वार्थ ही हिंदू धर्म के पतन का प्रमुख कारण है।

सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में सामाजिक न्याय स्वतंत्रता का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। स्वतंत्रता में समाज, राज्य या अन्य किसी व्यक्ति या वर्ग का कोई बंधन ना हो। भारतीय संविधान में स्वतंत्रता का प्रावधान कर देने से मात्र से सामाजिक न्याय नहीं मिल सकता है। इस संबंध में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर का मानना है कि सामाजिक समानता का होना आवश्यक है। किसी भी समाज के नागरिकों को प्रदत्त अधिकारों एवं सुविधाओं में जितनी समानता होगी उतना ही व्यक्ति अपने जीवन में स्वतंत्रता का अनुभव कर सकेंगे। भारतीय समाज की हिंदू चतुर्वर्ण व्यवस्था में सुविधाओं एवं अधिकारों का वितरण में असमानता स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होता है।

स्वतंत्रता के लिए दूसरा महत्वपूर्ण आवश्यक दशा है– आर्थिक सुरक्षा। हिंदू सामाजिक व्यवस्था में स्वतंत्रतापूर्वक अपनी इच्छानुसार व्यवसाय चुनने पर प्रतिबंध था। ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य इन द्विज वर्णों को भी स्वतंत्रतापूर्वक व्यवसाय चुनने के लिए प्रतिबंध किया गया था तथा चौथे स्थान पर शूद्र वर्ण था, जिन्हें समाज में सबसे घृणित एवं निम्न व्यवसाय करना पड़ता था। मनु ने ऐसा माना है कि द्विज वर्णों की सेवा ही शूद्र का अपना धर्म है और इसी से उसे परम सुख की प्राप्ति हो सकती है। शूद्र वर्ण को अपनी संपत्ति रखने का अधिकार नहीं था। मनु का मानना था कि शूद्र को संपत्ति एकत्रित करना पाप है, यदि गलती से कोई शूद्र संपत्ति को इकट्ठा कर लेता है, तो उसका मालिकाना हक शूद्र के स्वामी का होगा साथ ही मनु ने कहा था कि वर्ण व्यवस्था द्वारा निर्धारित कार्य यदि किसी षूद्र द्वारा नहीं किया जाता है तो उसके लिए राजा के द्वारा दंड विधान निरूपित किया था। इस प्रकार मनु ने व्यवसाय पर प्रतिबंध लगाकर व्यवसायिक नियमों की अवहेलना करने वाले को दंडनीय अपराध बनाकर मनु ने हिंदू समाज के आर्थिक स्वतंत्रता को पूर्णतया विलोपित कर दिया।

स्वतंत्रता के लिए तीसरा सबसे महत्वपूर्ण आवश्यक दशा है– शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार। प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था मुख्यतया धार्मिक ज्ञान पर आधारित था। हिंदू सामाजिक व्यवस्था में केवल द्विज वर्णों को ही वेदों को अध्ययन करने का अधिकार था तथा शूद्र वर्ण को वेदों का अध्ययन एवं यज्ञ संचालन का अधिकार नहीं प्राप्त था। गौतम ऋषि ने तो यहां तक व्यवस्था कर दी थी, कि वैदिक मंत्रों को सुनने वाले शूद्र के कॉन में टिन या लाख को पिघलाकर डाल देना चाहिए। मनुस्मृति में कहा गया है कि यदि कोई नीच जाति का व्यक्ति लोभवश ऊंची जाति का कर्म करने लगे, तो राजा उसका सर्वस्व छिन कर उसे शीघ्र ही देश से निकाल दे। प्रोफेसर जी0 एस0 घूरिये ने स्पष्ट किया कि धार्मिक पवित्रता की भावना को न केवल चांडाल आदि निम्न स्तर के लोगों पर लागू किया गया, वरन् शूद्र वर्ण की स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होती गई। इस प्रकार भारतीय सामाजिक व्यवस्था के चतुर्वर्ण विधान ने शूद्र वर्ण को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर सामाजिक न्याय में भेदभाव पूर्ण व्यवहार कर भारतीय सामाजिक व्यवस्था की नींव को प्रगति की मुख्यध ारा से कूप में ढकेल दिया।

इस प्रकार परंपरागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान अन्यायपूर्ण प्रकृति एवं उनके कारणों को अवलोकन करते हुए डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने निम्न निष्कर्ष एवं विचार व्यक्त किये–

1. हिंदू वर्ण व्यवस्था अवैज्ञानिक, अत्याचार पूर्ण, संकीर्ण तथा गरमाहीन है।
2. हिंदू वैचारिकी, हिदू विधान एवं हिंदू समाज ने व्यक्ति को महत्व नहीं दिया। इसने वर्ण को महत्ता प्रदान की।
3. हिंदू सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत कमजोर वर्गों में जितना संघर्ष भारत में है वैसा विश्व के किसी अन्य देशों में नहीं।
4. हिंदू समाज में सामाजिक न्याय का अभाव इसलिए है, क्योंकि इसका विधान समानता, स्वतंत्रता एवं भाईचारे का निषेध करता है। यह असमानता, दासता और वर्ण–जाति भेदभाव पर बल देता है।
5. इस व्यवस्था से कार्य कुशलता में हॉनि पहुंचता है क्योंकि जातियों के आधार पर व्यक्तियों के कार्यों का निर्धारण पूर्व में ही कर दिया जाता है।
6. हिंदू विधान लौकिक नहीं ईश्वरी है, इसलिए इसमें परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं है।
7. अंतर्जातीय विवाह, इस व्यवस्था में निषेध होते हैं।
8. सामाजिक विद्वेष और घृणा के प्रसार से इस व्यवस्था को बल मिलता है।

उल्लेखनीय है कि इस भेदभाव रूपी सामाजिक व्यवस्था में सुधार के लिए डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने व्यापक आंदोलन शुरू किया जिससे सामाजिक न्याय को स्थापित किया जा सके। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने सर्वप्रथम सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त कमियों को दूर करने का संघर्षपूर्ण प्रयास किया। उनका मानना था कि न्यायपूर्ण व्यवस्था, न्यायपूर्ण विधान के बिना स्थापित नहीं रह सकता है इसलिए इन्होंने भारतीय संविधान के द्वारा न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी तथा भारतीय संविधान में व्यक्ति की गरिमा की रक्षा का आधारशिला रखा तथा साथ ही साथ जिन वर्गों के साथ सदियों से अत्याचार, भेदभाव, शोषण एवं अन्याय हो रहा था उनकी धर्म शास्त्रों के द्वारा थोपी गई निर्योग्यताओं को दूर करने का अथक प्रयास किया।

सामाजिक न्याय को स्थापित करने के लिए भातृत्व का भी होना आवश्यक है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था की नींव वर्ण व्यवस्था तक ही सीमित होता तो अच्छा होता, लेकिन इस वर्ण व्यवस्था का कालान्तर में ब्राहम्णों ने अपनी चतुरबुद्धि का उपयोग कर स्वार्थवश स्वहित के लिए व्यावसायिक आधार पर सैकड़ों जातियों में विभक्त कर दिया तथा साथ ही सभी के व्यवसाय को जन्म से जोड़ दिया और स्वतन्त्रता पूर्वक व्यवसाय चुनने पर प्रतिबन्ध लगा दिया और उन्होंने व्यवसाय की प्रकृति के आधार पर उच्चता और निम्नता का बीज बो दिया तॉकि भविष्य में ये आपस में ही एक दूसरे के साथ उच्चता और निम्नता जैसे भेदभाव के मकड़जाल में फंसे रहें तथा ये इस भेदभाव रूपी मकड़जाल से कभी न निकल सकें। जिससे कोई व्यक्ति भविष्य में अपना वर्ण परिवर्तन न कर सके। डॉक्टर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

अम्बेडकर के अनुसार भारतीय समाज विभिन्न जातियों में विभाजित होने के परिणामस्वरूप इनमें भातृत्व की भावना का नितांत अभाव है। भारतीय समाज सैकड़ों जातियों में बंटा हुआ हैं तथा इन सैकड़ों जातियों में अनेक उपजातियां हैं, यह जातियां ही समाज में न्याय की स्थापना में मुख्य रूप से बाधक बना हुआ है। जातियों में इस प्रकार के भेदभाव होने के कारण भारतीय सामाजिक व्यवस्था में भाईचारा एवं एकता का अभाव पाया जाता है। जाति भेदभाव भारतीय समाज में हिंदू धर्म के पतन का मूल कारण है।

भारतीय सामाजिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन लाने में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर का महत्वपूर्ण योगदान है। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने अन्याय पूर्ण सामाजिक भेदभाव रूपी व्यवहार को स्वयं महसूस किया था इसलिए भारतीय संविधान का निर्माण करते समय न्यायपूर्ण समाज की व्यवस्था का नया विधान प्रस्तुत किया जो स्वतंत्र भारत में स्पष्ट रूप से इसकी छाप दिखाई पड़ता है। डॉक्टर अम्बेडकर का ही योगदान है कि आज दलितों, पिछड़ों, शोषितों, महिलाओं आदि को अधिकार मिल पाया है तथा भारत के सर्वांगीण विकास में मील का पत्थर बनते हुए अपनी प्रासंगिकता को बनाए हुए हैं। इस प्रकार सामाजिक संरचना के निर्माण में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का अविस्मरणीय योगदान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, बृजेश कुमार– "सामाजिक न्याय एवं डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर" सामाजिक विमर्श अम्बेडकर विचार विशेषांक, अम्बेडकर अध्ययन केंद्र, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी– 2006.
2. मनुस्मृति– I, II
3. जी0 एस0 घूरिये– कास्ट क्लास एंड ऑक्यूपेशन, 1961.
4. चतुर्वेदी, प्रेरणा– सामाजिक समरसता एवं डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर– 2018.
5. पांडेय, प्रशांत– डॉ० बाबासाहेब अम्बेडकर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1991.

*****